वना ध

बालिकं वाउज्ञः॥ ६॰॥ पनसः वं टिक्पिलो निव्सी ऽखु जाइ वज्ञानः। नानादु म्बरिका फालार्म ल पूर्वी घने फाला ॥ ६९॥ अरिष्टः सर्वे ता भद हिङ्गिनियासमालकाः। पिचुम ईस्विनिवा ऽयपिच्छि लागुरु शिंश पा ॥६२॥ कविलाभ सागभासाशिरीवस्तु कपीतनः। भरिहले।ऽप्यथपा मोय सम्पना हो मपुष्पनः ॥ ६३॥ एत स्व निनागन्य फलीसार् यनेस रे। बक्लावञ्जलाऽशाक्समाक्रक्ताडमा॥ ६४॥ चाम्पेयः केस्रेनाः गकेसरःकाञ्चनाह्यः। जयाजयनी नक्षिरीनादेयीवेजयन्तिका॥ ६५॥ भी पर्शामित्रिमंथः स्थान्कशिकागणिकारिका। ज्ञयाथकुटजः श क्रोवक्स वागिरिम हिन्ना।। ६६॥ एतस्य व नि न्द्रयवभद्यवंपाले। स ष्ट्रा कपा ना विग्र खेषेगाः कर मर्दे के ॥ ६ ७॥ का न न्य न्यस्तमानः स्थानापिक्काऽप्यथिसम्बनः। सिन्दुवारोन्द्र स्वितिर्ग्राडीन्द्राणिकेत्य पि॥६=॥ वेणी खरगरीदे वता डाजीमू त इत्यपि। श्री इसिनी तुभूर राष्ट्रीतृगा म्यून्यंतुमहिन्नका ॥ ह्ए॥ भू पदीशी तभीक् सुसैवास्फाना बना इ वा। शेफालिकानुसुवहानिर्गाडीनी लिका चसा॥ ७०॥ सिनासा स्व त स्माभूतवेश्य ऽ यमागधी । गणिकाय्यिका म्ब कासापीता हे म पृष्यि का॥ ७१॥ अतिमृतः पुंड्रकः स्याद्यास्नीमाधवी लता। खमनामाल मोजातिः सप्तलान वमा लिका ॥ ७२ ॥ माध्यक्ट्रं नाक्छ बन्ध्काब न्धजीवनः। सहानुमारीतरणिरस्वानस्यमहासहा। ७३॥ तन्था